अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान (वर्ष : 2021) दिनांक : 26-08-2021

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघु दंडक–30

प्र. 1 कोई चार द्वार लिखें– 24

(क) लेश्या द्वार में सात नारकी को छोड़कर भवनपति से पूरा अंत तक लिखें।

(ख) गति-आगति द्वार–नौवें देवलोक से अंत तक लिखें।

(ग) समुद्घात को परिभाषित करते हुये पूरा द्वार लिखें।

(घ) मनुष्य की अवगाहना लिखें।

(ङ) संस्थान क्या है? प्रकारों का नामोल्लेख करते हुय अंत तक लिखें।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) च्यवन द्वार।

(ख) दर्शन द्वार।

(ग) शरीर द्वार।

(घ) उत्पत्ति द्वार।

पांच ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) अनन्तर सिद्ध केवलज्ञान के प्रकारों की व्याख्या करें।

(ख) मनःपर्यव ज्ञान की परिभाषा लिखते हुये बतायें कि इस ज्ञान का स्वामी कौन होता है?

(ग) मतिज्ञान के प्रकारों की व्याख्या करें।

(घ) श्रुतज्ञान के समुच्चय रूप से चार प्रकार कहे गये हैं–स्पष्ट करें।

(ङ) आनुगामिक अवधिज्ञान को परिभाषित करते हुये उसके प्रकारों का वर्णन करें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें– 6

(क) अतीर्थंकर सिद्ध कौन होते हैं?

(ख) केवलज्ञान के कितने प्रकार हैं? नाम बतायें।

(ग) नौ निकाय शब्द किनके लिए प्रयुक्त होता है?

(घ) वैनयिकी बुद्धि से क्या तात्पर्य है?

(ङ) सम्यक् श्रुत क्या है? समझायें?

(च) क्षायोपशमिक अवधिज्ञान किनको होता है?

(छ) विपुलमति मनःपर्यवज्ञान क्या है?

(ज) अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा का कालमान लिखें।

गीतिका–गुणस्थान दिग्दर्शन–10

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 2

(क) ईयापथिक का बंध किन गुणस्थानों में होता है और इसकी स्थिति लिखें।

(ख) कौन से गुणस्थान अमर हैं?

(ग) मोहकर्म का क्षय–निष्पन्न भाव किन-किन गुणस्थानों में होता है?

(घ) तेरहवें गुणस्थान के पहले समय में कौन से कर्म क्षीण होते हैं?

प्र. 6 कोई दो पद्य भावार्थ सहित लिखें– 8

(क) मोह नो उदै.....तामो रे।

(ख) उपसम श्रेणीवंत.....दबावै रे।

(ग) आयुकर्म.....मिलावें रे।

(घ) इग्यारमें.....मांयो रे।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–30

प्र. 7 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल–अंक 23 का भांगा ***'अथवा'*** दसवां बोल। 3

(ख) चतुर्भंगी–सत्रहवां बोल ***'अथवा'*** पच्चीसवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–पन्द्रहवां बोल ***'अथवा'*** उन्नीसवां बोल। 3

(घ) तत्त्व चर्चा–कर्म पर चर्चा ***'अथवा'*** नौ तत्त्व पर चोर-साहूकार। 3

(ङ) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खंड)–परमात्म द्वार ***'अथवा'*** सावद्य–निरवद्य द्वार। 3

(च) कर्म प्रकृति–दर्शनावरणीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति ***'अथवा'*** सात वेदनीय कर्म भोगने के हेतु। 4

(छ) बावन बोल–चौबीस दंडकों में लेश्या कितनी? ***'अथवा'*** उदय के 33 बोलों में कौन-कौन सी आत्मा। 4

(ज) इक्कीस द्वार–मिथ्यात्वी या सूक्ष्म का बोल। 4

(झ) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खंड)–सामायिक प्रतिमा व श्रमणभूत प्रतिमा ***'अथवा'*** मूल व छेद सूत्रों के नाम लिखें। 3